

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



जैन जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया एम.ए.

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया बी.कॉम.

❖ वर्ष ४८ वे ❖ अंक ६ वा ❖ फेब्रुवारी २०१७ ❖ वीर संवत २५४३ ❖ विक्रम संवत २०७३

| या अंकात | पान नं. | पान नं. |
|--|---------|--|
| ● श्री जीरावला तीर्थ | १५ | ● सिध्दशिला पर जाना है । ५३ |
| ● आचार्य श्री रत्नसुंदर सुरीश्वरजी म.सा. - | - | ● स्वयं का सुधार दुख से उध्दार ५५ |
| पद्म भूषण | १६ | ● विहार का अर्थ है - |
| ● आनंद तीर्थ, चिचोंडी - वर्षीतप | १७ | व्यापक जन जागरण अभियान ५६ |
| ● कव्हर तपशील | १९ | ● मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया - |
| ● जिनेश्वरी : अध्याय ९ - नमी राजर्षि | २१ | जिंदगी जिंदगी - Life-o-Life ६७ |
| ● संधारा भूमि, पुणे | ३३ | ● नये व्यवसाय - कब, कहाँ और कैसे ? ७३ |
| ● कडवे प्रवचन | ३३ | ● जबकि ७५ |
| ● सुखी जीवन की चाबियाँ - | | ● प्रेमाचा Pink Day - व्हॅलेटाईन डे ७६ |
| माता पिता की पूजा (१) | ३९ | ● ज्वलंत प्रश्न - शान्त उत्तर ७९ |
| ● ऐसी हुई जब गुरुकृपा - उधार ना ले | ४७ | ● हास्य जागृति ८१ |
| ● मृत्यु को महोत्सव बनाएँ - | | ● बजेट डेफिसीट - सरप्लस ८३ |
| एक दौर समाप्त हुआ | ४८ | ● सुवासित ८४ |
| ● चार्ज करे जिंदगी - | | ● निगर्वी, निर्मोही, अजातशत्रू व्यक्तिमत्व - |
| कहीं आप असफल तो नहीं हुए । | ४९ | मा. राज्यमंत्री अॅड. चंद्रकांतजी छाजेड ८५ |
| ● सुखी बनो : राग, द्वेष मुक्त रहो | ५१ | ● पुणे मनपा स्व. चंचलबाई कांतीलाल |
| | | चोरडिया वाहनतळ - उद्घाटन ९१ |

| | | |
|---|------------------------|--|
| ● जैन एज्युकेशनल इन्स्टिट्यूट | ● गौतमनिधी, वडगाव शेरी | १०५ |
| अधिवेशन - चांदवड | ९२ | ● साध्वी डॉ. प्रशंसाश्रीजी म.सा. Ph.D. |
| ● विचारधन | ९३ | १०७ |
| ● आचार्य श्री. विजय रत्नसेन सुरीश्वरजी म.सा | ९५ | ● संचेती ट्रस्ट, पुणे |
| ● धार्मिक परीक्षा बोर्ड, अहमदनगर | ९७ | १०९ |
| ● सुर्यदत्ता ग्रुप, पुणे | १०० | ● कटारिया परिवार स्नेहसंमेलन, करमाळा |
| ● पूना मर्चन्टस् चेंबर | १०० | ११० |
| ● वाचकांचे मनोगत | १०२ | ● अॅड. चंद्रकांतजी छाजेड - निधन |
| | | १११ |
| | | ● बुढिया की सुई |
| | | ११३ |
| | | ● विविध धार्मिक, सामाजिक व |
| | | राजकीय बातम्या |

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित, एकूण अंक १२

❖ पंचवार्षिक वर्गणी - २२०० रु. ❖ त्रिवार्षिक वर्गणी - १३५० रु.

❖ वार्षिक वर्गणी - ५०० रु. ❖ या अंकाची किंमत ५० रुपये.

❖ वर्गणी व जाहिरात रोखीने/On line/RTGS/AT PAR चेक/पुणे चेकने/मनीऑर्डर/ड्राफ्टने/'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.

● www.jainjagruti.in ● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

हे पत्रक संपादक, प्रकाशक, मुद्रक व मालक श्री. संजय कांतीलाल चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, पर्वती, पुणे १ येथे छापून ६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे ३७ येथे प्रसिद्ध केले. लेखकांच्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवायीसाठी पुणे न्यायालय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

जैन जागृति मासिकाचे ग्राहक बना !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतिप्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वतः जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

जैन जागृति - वर्गणीचे दर

| | | | | | |
|------------|----------|-------------|----------|---------|---------|
| पंचवार्षिक | रु. २२०० | त्रिवार्षिक | रु. १३५० | वार्षिक | रु. ५०० |
|------------|----------|-------------|----------|---------|---------|

वर्गणी व जाहिरात - रोख/मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

JAIN JAGRUTI - BANK ACCOUNT DETAILS

Bank : STATE BANK OF INDIA
Current A/c No. : 10521020146

Branch : Market Yard, Pune 37.
IFS Code : SBIN0006117

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ मो.संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१, www.jainjagruti.in
Email : jainjagruti1969@gmail.com B Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- ❖ भोसरी, चिंचवड, निगडी - श्री. चांदमलजी लुंकड - फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- ❖ पुणे शहर ❖ कुर्डुवाडी - श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३००००८१
- ❖ गुरूवार पेठ, पुणे - श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- ❖ धनकवडी, पुणे - श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५
- ❖ महावीर प्रतिष्ठान, पुणे - निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- ❖ सदाशिव पेठ, परिसर, पुणे - सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- ❖ वडगाव शेरी, पुणे - सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- ❖ वडगाव मावळ, पुणे - श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- ❖ खडकी, पुणे - श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- ❖ औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव - श्री. शिरीषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- ❖ दापोडी, पुणे - श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- ❖ नांदेड सिटी, पुणे - श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
- ❖ दौंड, श्रीगोंदा - श्री. रविंद्र चैनसुखलालजी गुगळे - ९८९०७२३४०२
- ❖ घोडनदी, जि. पुणे - श्री. पारसमलजी बांठिया, मो. : ९२२५५४२४०६
- ❖ अहमदनगर - श्री. महेश एम. मुनोत- मो. ९४२०६३९२३०
- ❖ जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका - श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी - मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- ❖ सोनई - श्री. मदनलालजी सी. भळगट - फोन : ०२४२७-२३१४६१, मो. ९८८१४१४२१७
- ❖ औरंगाबाद - श्री. सुभाषचंदजी मांडोत-फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- ❖ मुंबई खारघर- श्री. मदनलालजी गांधी-मो. ९८२०५३६७९३
- ❖ धनसोली, नवी मुंबई - श्री. सुभाष केशरचंदजी गादिया, मो. ९१५८८८६८५
- ❖ नाशिक - श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३-२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- ❖ नाशिक - मनोज लखीचंदजी खिंबसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- ❖ बीड - श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
- ❖ गारगोटी (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- ❖ श्रीरामपूर -श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- ❖ लासलगाव - श्री. मनसुखजी साबद्रा, मो. : ९३२६३२५३४७
- ❖ बारामती- डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२-२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- ❖ अंमळनेर, जि. जळगाव - श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- ❖ जळगाव - श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- ❖ धुळे - श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- ❖ शहादा, जि. नंदुरबार - श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- ❖ इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर - श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- ❖ मिरज, जि. सांगली - श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- ❖ कोल्हापूर - सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१-२५४२२५३
- ❖ सातारा व सातारा जिल्हा - श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. - ७५८८५६१३२०, ९८५०९८२६४४

जीरावला तीर्थ – प्रतिष्ठा महोत्सव २८०० साल पुराना जैन मंदिर, १३ साल चला जीर्णोद्धार कार्य



देवधरा अबुंदांचल के धार्मिक इतिहास में एक और स्वर्णिम अध्याय जुड़ने जा रहा है। कस्बे के समीप स्थित जीरावल जैन तीर्थ में पिछले १३ साल से बन रहे मंदिर की प्रतिष्ठा इसी माह होगी। आयोजन की भव्यता और मंदिर की वैभवता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रतिष्ठा महोत्सव में देशभर से हजारों संत और लाखों श्रद्धालु शामिल होंगे। जिसके लिए गत एक साल में एक रथ ने देशभर में १५ हजार किमी की यात्रा कर शहर-शहर गाँव-गाँव में आमंत्रण दिया है। पूरा मंदिर ४.६६ लाख स्क्वेअर फिट में बना है। जिसमें मुख्य मंदिर ३६ हजार स्क्वेअर फिट में बना है। मंदिर को बनाने में करीब एक लाख ५० हजार घन फिट मकराना का सफेद संगमरमर लगाया गया है। बाकी निर्माण कार्य जैसलमेर समेत अन्य महंगे पत्थरों से हुआ है।

दिव्यता : मंदिर की दिव्य भव्यता है। इसलिए देश और दुनिया में जहाँ भी जैन मंदिर की प्रतिष्ठा होती है तो भगवान के पीछे के भाग की दीवार पर जीरावल पार्श्वनाथ का ही मंत्र लिखा जाता है। अंजनशालाका

के समय जल अभिमंत्रित करने के लिए भी इसका ही स्मरण किया जाता है।

भव्यता : मंदिर की भव्यता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि यह १३ साल में बनकर तैयार हुआ और पुरे मंदिर में देलवड़ा मंदिर जैसी नक्काशी, रणकपुर की बांधनी और जैसलमेर की शिल्पकला को साकार किया गया है।

२८०० साल प्राचीन मंदिर : बताया जाता है कि यह मंदिर २८०० वर्ष प्राचीन है। मेरुतुंगसूरिजी महाराज द्वारा रचित श्री जीरावला पार्श्वनाथ स्रोत के अधार पर इस तीर्थ में विराजमान मूलनायक श्री जीरावला जैन तीर्थ का निर्माण २८०० वर्ष पूर्व रत्नपूर नगर के राजा चंद्रयश राजा ने दूध और वालू से किया था। कालांतर में यह प्रतिमा भूमिगत हो गई। इसके बाद निकट के वरमाण गाँव के धांधल श्रावक को इस प्रतिमा का स्वप्न आया। जिस पर उन्होंने सिंहोली नदी के समीप देवत्री गुफा से इसे प्रकट किया। इसके बाद आचार्य अजितदेव सुरिश्वर के हाथों से मूलनायक की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। मुगल आक्रमणों में यह मंदिर तहस

नहस कर दिया गया । इसके बाद इसकी प्रतिष्ठा पहले भी की गई, लेकिन इतने भव्य स्तर पर मंदिर का निर्माण और जिर्णाध्दार पहली बार हुआ है ।

५ बड़े शिखर, ६० देवकुलिकाएँ : मंदिर में पाँच विशाल शिखर हैं । मुख्य शिखर के नीचे मूलनायक श्री जीरावला पार्श्वनाथ दादा विराजेंगे । आसपास के चार शिखरों ने मूलनायक शंखेश्वर पार्श्वनाथ, नूतन जीरावल पार्श्वनाथ, नेमिनाथ और श्री महावीर स्वामी विराजेंगे । इसके अलावा मंदिर में तीन दृहद देव कुलिकाएँ, चार कोनो में आठ लघु महाधर प्रसाद बनाए गए हैं । शेष ४२ देवकुलिकाओ में १०८ पार्श्वनाथ, २ देवकुलिकाओ में शुभ सरस्वती और श्री गौतमस्वामी गणधर विराजेंगे ।

खास बातें : * जीरावला पार्श्वनाथ जैन धर्म में विघ्नहर्ता माने जाते हैं । किसी भी शुभ कार्य से पूर्व उनका स्मरण किया जाता है ।

* पूरा मंदिर मकराना के सफेद संगमरमर से बना है जबकि धर्मशालाएँ और अन्य भवन जैसलमेर के पत्थरों से बने हैं ।

* मंदिर और धर्मशाला के अलावा पचीस हजार स्क्वेअर फिट में श्रावक, श्राविका, उपाश्रय, पेढी कार्यालय, स्वागत कक्ष और प्रदर्शन हॉल बना है ।

* सव्वा तीन लाख स्क्वेअर फिट में संघ आयोजन वाटिका और विशाल महाप्रवेश द्वार बनाए गए हैं ।

२४ तीर्थकरों के मंदिर : मुख्य मंदिर पार्श्वनाथ भगवान का, इसके अलावा अन्य मंदिर भी ।

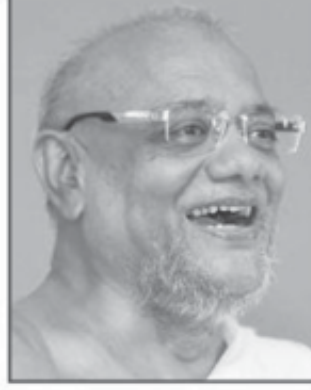
६० हजार स्क्वेअर फिट में धर्मशाला : दो सौ कमरों वाली यहाँ धर्मशालाएँ बनाई गई हैं । जो जैसलमेर के पत्थरों से बनी है ।

३ मंजिल की भोजनशाला : मंदिर के साथ ही एक विशाल भोजनशाला बनाई है । जो तीन मंजिल की है ।

११ दिन चलेगा प्रतिष्ठा महोत्सव : महोत्सव २३ जनवरी से शुरु होगा और २ फरवरी तक चलेगा।●

आचार्य श्री रत्नसुंदर सुरीश्वरजी म.सा. -

पद्म भूषण



आचार्य
पूज्यश्री रत्नसुंदर
सुरीश्वरजी म.सा.
यांना भारत सरकार
द्वारा २६ जानेवारी
रोजी पद्म भूषण हा
सन्मान देऊन
गौरविण्यात आले.
भारताच्या

इतिहासात पहिल्यांदा जैन संताना हा बहूमान मिळाला आहे. आचार्य रत्नसुंदर सुरीश्वरजी म.सा. यांनी आपल्या वाणीने व लेखना द्वारे फक्त जैन समाजाला नाही तर भारतातील सर्व सामान्य जनतेला, गणमान्य व्यक्तींना प्रभावित केले आहे. आचार्यश्रीजींची आतापर्यंत ३०० च्या वर पुस्तके प्रकाशित झालेली आहेत. आचार्यश्रीजींचे रोज संध्याकाळी पारस चॅनल वर रात्री १० ते ११ व अरिहंत चॅनल वर रात्री ९ ते १० या काळात प्रभावशाली प्रवचन प्रसारीत होत आहे.

शालेय अभ्याक्रमात लैंगिक शिक्षणाचे पाठ असावेत असा ठराव सरकारी दरबारी करण्यात येणार होता. या विरोधात सर्व साधूसंतांच्या वतीने आचार्यश्रीने दिल्ली येथे जाऊन सरकार पुढे संसद भवनात आपली बाजू प्रभावीपणे मांडली. त्यांच्या या कार्याला यश येवून हा ठराव मागे घेण्यात आला.

आचार्यश्रींना मिळालेला पद्म भूषण पुरस्कार हा संपूर्ण जैन साधूसंत यांना मिळालेला पुरस्कार आहे. आम जनतेत जैन साधूसंताबद्दल आदरयुक्त आश्चर्यकारकची भावना आहे. त्यांचा हा सन्मान आहे. आचार्यश्रींच्या या पुरस्कारामुळे जैन समाजात आनंदाची लहर आहे. ●

पुणे महानगर पालिका स्व. चंचलबाई कांतीलाल चोरडिया वाहनतळ - उद्घाटन



जैन जागृति परिवारातील श्रीमती चंचलबाई कांतीलालजी चोरडिया यांना २७ नोव्हेंबर २०१६ रोजी समाधीमरण लाभले. जैन जागृति मासिकाच्या उभारणीस व वाटचालीस त्यांचा अत्यंत मोलाचा वाटा आहे.

पुणे म.न.पा. च्या नगरसेविका सौ. मनीषा प्रवीणजी चोरबेले व युवा कार्यकर्ते श्री प्रवीणजी चोरबेले यांच्या विशेष प्रयत्नातून सीटीप्राईड टॉकीज शेजारी, पुणे सातारा रोड पुणे ३७ येथील म.न.पा. च्या वाहन तळास स्व. श्रीमती चंचलबाई कांतीलालजी चोरडिया वाहनतळ हे नाव देण्यात आले.

६ जानेवारी रोजी आमदार माधुरीताई मिसाळ, नगरसेविका सौ. मनीषा चोरबेले, नगरसेवक श्री. अभयजी छाजेड, पूना चॅम्बर्सचे अध्यक्ष श्री. प्रवीणजी चोरबेले, श्री. अनीलजी भनसाळी, श्री. अभिजित डुंगरवाळ, जैन जागृतिचे संपादक श्री. संजय कांतीलालजी चोरडिया व सौ. सुनंदा चोरडिया, श्री. प्रवीण चोरडिया, सौ. ज्योती चोरडिया, श्री. प्रवीण पगारिया सौ. आशा पगारिया व चोरडिया परिवारातील सदस्य व इतर सामाजिक व राजकीय कार्यकर्ते, पुणे म.न.पा.चे अधिकारी वर्ग इ.च्या उपस्थितीत वाहनतळ उद्घाटन कार्यक्रम संपन्न झाला.

यावेळी झालेल्या कार्यक्रमास आमदार माधुरीताई मिसाळ, नगरसेविका सौ. मनीषा चोरबेले, नगरसेवक श्री. अभय छाजेड यांनी आपल्या भाषणात चोरडिया

परिवाराला शुभेच्छा दिल्या. जैन जागृतिच्या संपादिका सौ. सुनंदा चोरडिया यांनी उपस्थित मान्यवर व पुणे म.न.पा. चे आभार मानले.

जय आनंद पदयात्रा - २० ते २८ मार्च चिंचवड ते अहमदनगर

राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट प.पु. आनंदकृषिजी म.सा. यांच्या पुण्यतिथी निमित्त दि. २० ते २८ मार्च २०१७ रोजी चिंचवड ते अहमदनगर पदयात्रा निघत असते. ज्या भाविकांना या पदयात्रेमध्ये यावयाचे असेल त्यांनी आपली नावे श्री. संदिप कांकरिया व गणेश धोका यांच्याकडे मोबा. नं ९८६०६९९२३४ व ९८९०९५६७३५ या नंबरवर संपर्क साधावा. कृपया आपली नावे १० मार्च २०१७ पर्यंत कळवावे. सदरहू ही बातमी जयआनंद पदयात्रेचे संस्थापक अध्यक्ष शरद लुणावत यांनी दिली.

श्री सकल रायसोनी परिवार - स्नेहमिलन २३-२४ फेब्रुवारी - शहापूर तीर्थ

श्री सकल रायसोनी परिवाराचे स्नेहमिलनाचा कार्यक्रम २३-२४ फेब्रुवारी २०१७ रोजी शहापूर तीर्थ येथे होणार आहे. या सम्मेलनात जास्तीत जास्त रायसोनी परिवारांनी भाग घ्यावा असे आवाहन अध्यक्ष श्री. प्रेमचंदजी रायसोनी, जळगाव यांनी केले आहे. संपर्क मो. ९४२३४८९८७०, ०९८२२२-८३०२१

कच्छर तपशील - फेब्रुवारी २०१७

- B श्री जीरावला तीर्थ - प्रतिष्ठा महोत्सव
महान ऐतिहासिक जीरावला तीर्थचा प्रतिष्ठा महोत्सव ३० जानेवारी ते २ फेब्रुवारी या काळात अतिभव्य कार्यक्रमात संपन्न झाला. या महोत्सवात अनेक गच्छाधीपती, आचार्य भगवंत, हजारो साधू साध्वी व लाखो समाज बांधवांनी भाग घेतला.
- B आचार्य श्री रत्नसुंदर सुरीश्वरजी म.सा. - पद्म भूषण
आचार्य पूज्यश्री रत्नसुंदर सुरीश्वरजी म.सा. यांना भारत सरकार द्वारा २६ जानेवारी रोजी पद्म भूषण हा सन्मान देऊन गौरविण्यात आले.
- B साध्वी डॉ. प्रशंसाश्रीजी म.सा. - Ph.D.
प.पू. डॉ. प्रशंसाश्रीजी म.सा. यांच्या “जैनागम और मनोविज्ञान” या शोध प्रबंधाला Ph.D. डिग्री मिळाली आहे. महावीर प्रतिष्ठान येथे युवाचार्य श्री महेंद्रऋषिजी म.सा., प्रवर्तक श्री कुंदनऋषिजी म.सा. आदि ठाणा यांच्या सान्निध्यात अभिनंदन समारोह संपन्न झाला. यावेळी टिळक महाराष्ट्र विद्यापिठाचे कुलगुरु श्री. दिपकजी टिळक, डॉ. कांतीलाल संचेती, श्री. विजयकांतजी कोठारी, श्री. पारसजी मोदी, श्री. विलासजी राठोड इ. मान्यवर
- B जैन एज्युकेशन इन्स्टिट्यूट अधिवेशन - चांदवड
चांदवड येथे नेमिनाथ जैन ब्रम्हाचर्याश्रम संस्थेत फेडरेशन ऑफ एज्युकेशनल इन्स्टिट्यूटचे वार्षिक राज्य अधिवेशन ८ जानेवारी रोजी संपन्न झाले. या अधिवेशनात FJEI चे संस्थापक श्री. शांतीलालजी मुथा, नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. वल्लभजी भनसाळी, महाराष्ट्र शाखेचे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. अजितजी सुराणा व संपूर्ण भारतातून जैन शैक्षणिक संस्थांचे पदाधिकारी उपस्थित होते.

- B जैन कॉन्फरन्स - मेगा ब्लड डोनेशन कॅम्प
आचार्य भगवंत श्री. डॉ शिवमुनिजी म.सा. यांच्या ७५ व्या हिरक जन्मजयंती निमित्त जैन कॉन्फरन्स द्वारा संपूर्ण भारतात मेगा ब्लड डोनेशन ब्लड कॅम्पचे आयोजन २६ जानेवारी २०१७ रोजी करण्यात आले. भारतात विविध शहरे, तालुका, गाव येथे कॉन्फरन्स द्वारा रक्तदान शिबिराचे आयोजन केले. सर्व ठिकाणी याला चांगला प्रतिसाद मिळाला.
अंधेरी मुंबई येथे रक्तदान शिबिरात उपस्थित युवा कार्यकर्ते श्री. पारसजी मोदी, श्री. महावीरजी ताथेड व कॉन्फरन्सचे पदाधिकारी.
- B तातेड परिवार - रक्तदान शिबिर
निगडी येथील श्री. अशोकजी तातेड यांच्या मातोश्री स्व. फुंदाबाई नेमीचंदजी तातेड यांच्या १७ व्या स्मृतीदिनानिमित्त १५ जानेवारी रोजी रक्तदान शिबिराचे आयोजन करण्यात आले. रक्तदान शिबिराचे उद्घाटन करतांना सौ. कविताजी सेठीया, श्री. सुभाषजी ललवाणी, श्री जयकुमार चोरडिया, श्री कांतीलालजी मुनोत, श्री अशोकजी तातेड व तातेड परिवार.
- B संचेती ट्रस्ट, पुणे - मतदान जन जागृति अभियान
पुणे येथील स्व. इंदुमती बनसीलाल ट्रस्टतर्फे २६ जानेवारी रोजी मतदान जन जागृति अभियान राबविण्यात आला. चला मतदान करू, लोकशाही बळकट करू असा संदेश यावेळी देण्यात आला. संस्थेचे अध्यक्ष श्री. अभय संचेती, श्री. मनिष संचेती, श्री. विजय शिंगवी, श्री. कांतीलाल श्रीश्रीमाळ, श्री. सुभाष पगारिया, श्री. हरकचंद देसरडा इ. मान्यवरांनी यात भाग घेतला.
- B संधारा भूमि, वैकुंठ - पुणे
नगरसेविका सौ. मनिषा प्रवीणजी चोरबेले यांच्या विशेष प्रयत्नातून वैकुंठ पुणे येथे वेगळी शेडसहित

संधाराभूमि निर्माण केली आहे. या संधारा भूमिला साध्वी श्री इंद्रकवरजी म.सा. यांचे नाव देण्याचे ठरले आहे. लवकरच याचे लोकार्पण समारोह होणार आहे.

- B **अॅड. श्री. चंद्रकांतजी छाजेड - निधन**
ज्येष्ठ राजनितिज्ञ व सर्व सामान्यांचे नेते अॅड. चंद्रकांतजी छाजेड यांचे १३ जानेवारी २०१७ रोजी अल्प आजारात निधन झाले. त्यांच्या अंत्ययात्रेला सुमारे वीस ते पंचवीस हजार लोकांचा जनसमुदाय व सर्व पक्षाचे आमदार, खासदार, नगरसेवक इ. अनेक मान्यवरांनी उपस्थित राहून श्री. चंद्रकांतजी छाजेड यांना भावपूर्ण श्रद्धांजली दिली.
- B **पुणे मनपा : स्वर्गीय चंचलबाई कांतीलाल चोरडिया वाहनतळ - उद्घाटन**
जैन जागृति परिवारातील श्रीमती चंचलबाई

कांतीलालजी चोरडिया यांना २७ नोव्हेंबर २०१६ रोजी समाधीमरण लाभले. सीटी प्राईड टॉकीज शेजारी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ३७ येथील वाहनतळास स्व. चंचलबाई कांतीलाल चोरडिया हे नाव देण्यात आले.

या वाहनतळाचे उद्घाटन ६ जानेवारी रोजी आमदार माधुरीताई मिसाळ, नगरसेविका सौ. मनिषा चोरबेले, नगरसेवक श्री. अभयजी छाजेड, युवा कार्यकर्ते श्री. प्रवीणजी चोरबेले, जैन जागृतिचे संपादक श्री. संजयजी चोरडिया व सौ. सुनंदा चोरडिया, श्री. प्रवीण चोरडिया, सौ. ज्योती चोरडिया, प्रवीण पगारिया, सौ. आशा पगारिया इ. हस्ते संपन्न झाले.

जैन जागृतिच्या संपादिका सौ. सुनंदा चोरडिया यांनी उपस्थित मान्यवर व पुणे मनपाचे आभार मानले.



वधू-वर जाहिरात 'जैन जागृति'

मासिकात व वेबसाईटवर द्या.

हजारो जैन परिवार व त्यांचे नातेवाईक, मित्रपरिवार पर्यंत पोहचा.

आपणांस वधू-वर निवडताना योग्य चौईस मिळण्यास मदत होईल.

कोणत्याही प्रसंगी देण्याची मौल्यवान भेट

'जैन जागृति' मासिक

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

आपले आम, स्नेहीजण, मित्र यांना भेट देण्याचा प्रसंग वर्षभरात खूप वेळा येत असतो. अशावेळी जैन जागृतिची वार्षिक / त्रिवास्तिक / पंचवास्तिक वर्गणी भरून आपल्या आवडणाऱ्या व्यक्तीस भेट म्हणून अवश्य द्या. जैन जागृतिचा अंक त्या व्यक्तीस दरमहा मिळत राहिल आणि आपली आठवण दरमहा आपल्या आवडत्या व्यक्तीच्या मनात दरवळत राहिल.

| | |
|------------|----------|
| पंचवास्तिक | रु. २२०० |
|------------|----------|

| | |
|-------------|----------|
| त्रिवास्तिक | रु. १३५० |
|-------------|----------|

| | |
|---------|---------|
| वार्षिक | रु. ५०० |
|---------|---------|

तीर्थकर प्रभु महावीरांचे अंतिम वचन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्रावर आधारीत

॥ जिनेश्वरी ॥

प्रवचनकार : उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.

(क्रमशः)

अध्याय ९ – नमी राजर्षि

मृत्युच्या मुखातही मुक्ती प्राप्त होऊ शकते. धगधगत्या आगीतही शीतलतेचा अनुभव घेता येऊ शकतो. भगवतेची ऊर्जा झाली की केवळ मनच नाही तनाच्या सुध्दा असाद्य व्याधीतून सिध्दी प्राप्त होते.

नमी राजाची वेदना तन जळते कि मन ?

मिथिला नगरीचा राजा नमी खूप सुखी आणि आनंदाने जीवन जगत होता. एकदा त्याच्या शरीरात व्याधी निर्माण झाली. शरीरात भयंकर दाह सुरू झाला. शरीराचा दाह होत होता पण राख होत नव्हती. रोमारोमात दाह, भयंकर आग होत होती. असा दाह, असा ताप, असा भयंकर उष्मेचा अनुभव की सर्वांगाची लाहीलाही होत होती. अनेक वैद्य आले त्यातील एका वैद्याने सांगितले की या व्याधीला शेवटचा एक पर्याय उरला आहे. 'रक्तचंदन उगाळून त्याचा शरीरभर लेप लावणे. जोपर्यंत चंदन ओले राहील तोपर्यंत शरीराला गारवा जाणवेल, जस-जसे चंदन सुकून जाईल पुन्हा दाह सुरू होईल.' २४ तास अहोरात्र चंदन घासणे सुरू झाले. त्याच्या राण्या चंदन उगाळण्यासाठी स्वतःच बसल्या. सर्व राण्यांच्या हातात बांगड्या होत्या. बांगड्यांचा आवाज होत होता.

जेव्हा मन संतप्त असते तेव्हा संगीत सुध्दा कोलाहल वाटते, जेव्हा हृदय शोकाकुल असते तेव्हा वसंत ऋतुतील मोहोर सुध्दा भयानक वाटतो आणि मन प्रसन्न असते तेव्हा वाळवंटात सुध्दा नंदनवन अनुभवास येते.

नमीचे शरीर तप्त होते, संतप्त होते, त्या बांगड्यांची किण किण त्याला किरकिर वाटू लागली. मनुष्याला कधी काय रूचेल आणि कधी काय खुपेल हे सांगताच येत नाही. ज्या बांगड्यांचा आवाज पूर्वी रूचत होता आज रूतायला लागला. राजा रोषाने मंत्र्याला म्हणाला "कळत नाही का, आधीच मी वेदनेने तळमळतोय, हा दाह मला संतप्त करतोय आणि कोण असमंजस आहे की इतका आवाज करीत आहे ?" मंत्री म्हणाला, "महाराज, आपल्याच राण्या आहेत, आपल्यासाठीच चंदन उगाळीत आहेत आणि चंदन घासतांना बांगड्यांचा आवाज होत आहे. बाकी कसलाही आवाज नाही, कोणतीही कलकल नाही." मंत्र्याला वाटले राजाला बांगड्यांचा आवाजाचा त्रास होतो म्हणून मंत्र्याने राण्यांना समजावले आणि आवाज बंद झाला. नमी पुन्हा संतप्त झाला.

आपले असेच असते ना ! मनासारखे केले नाही की संताप, बोलावले तरी ताप, नाही बोलावले तरी संताप. आमंत्रण दिले तर 'शेवटी आलाच ना आम्हांला बोलवायला', बोलावयाला नाही गेले तर 'मला कुठे बोलवायला आले.' दोन्ही बाजूंनी त्रासच त्रास. हे दुःखी मनाचे लक्षण आहे., कष्टी मनाचे चिन्ह आहे. जो दुःखी होतो तोच नकारात्मक विचार करतो आणि नकारात्मकच बोलतो.

बांगड्यांचा आवाज बंद झाला. आनंद व्हायला हवा होता पण उलटे नमी संतप्त झाला, "अरे! माझ्या शरीराची लाही-लाही होत आहे आणि तरी चंदन उगाळणे कसे काय बंद केले?" मंत्री म्हणाला "नाही

महाराज ! चंदन घासणे चालू आहे “नमी पुन्हा संतापला” मी अजुन जीवंत आहे. सौभाग्याचं चिन्ह बांगड्या आत्ताच काढून टाकल्या की काय ?” मंत्री म्हणाला. “राजन् सर्व बांगड्या नाही काढल्या. सर्वांच्या हातात सौभाग्याचे प्रतिक एक बांगडी ठेवली आहे म्हणून सौभाग्य ही सुरक्षित आहे आणि चंदन उगाळणं ही सुरळित चालू आहे.”

नमीने हे वाक्य ऐकले. तसं पाहिलं तर काही उपदेश नव्हता. पण ते जीवनाचे जिवंत सत्य होते त्या सत्याची ठिणगी नमीच्या चित्तात पडली आणि चैतन्याची ज्योत प्रज्वलीत झाली. नमीच्या मनात प्रश्न जागला, “मी का जळतोय ? माझे शरीर का जळतेय ? माझे मन का जळतेय ? माझ्या संतप्त होण्याचे एकच कारण आहे मी एक नाही, अनेक आहे. कळत नाही मी स्वतःला कुठे - कुठे गुंतवलेय ? किती तुकड्यात, खंडित करून ठेवले आहे आणि ज्योति शिखा एकाच सत्यावर स्थिरावली अखंडात आनंदाची बाग, खंड-खंडात संघर्षाची आग.

अनेक मन, चित्त असलेला मनुष्य चाळणी सारखे जीवन जगतो. चाळणीत भरले जाते खूप पण टिकत काहीच नाही. भगवंताची कृपा ही टिकत नाही. नमीला हे सत्य तीव्रतेने जाणवले की माझ्या त्रासाचे आणि त्राग्याचे मूळ कारण मी स्वतःला अनेक ठिकाणी खंडित करून ठेवले आहे, वाटावाटी करून ठेवली आहे.

हा देश हिंदुस्थान अखंड होता तेव्हा भारत - पाकिस्तानचा संघर्ष नव्हता. देशाचे २ तुकड्यात विभाजन झाले - आणि संघर्षाची आग पेटतच गेली. ती विझवली जाऊ शकत नाही. जोपर्यंत भाऊ भाऊ एकत्र होते तेव्हा प्रेमाची गंगा प्रवाहित होती..विभाजन झाले आणि आग पेटू लागली. समाजाची, घराची वाटणी झाली की आग पेटतेच अखंड राहते ती बाग..खंड-खंड झाली की केवळ आगच आग, मग

आपले शरीर असो, मन असो कुटुंब असो किंवा आपला समाज असो. जोपर्यंत अखंडित आहे तो पर्यंतच बाग असते... खंडीत झाले की आगच राहते नमीची चैतन्याची ज्योत प्रज्वलित झाली होती.

मृत्यूच्या मुखात मुक्तीची ज्योत

नमीने विचार केला - हे चंदन उपयोगी पडणार नाही कारण दाह, आग होण्याचं खरं कारण तर माझे खंड-खंड झालेले चित्त आहे. ते जो पर्यंत अखंड होत नाही, आग बंद होणारच नाही. नमी जागृत झाला होता. त्यांचा मोह, षड्रिपू नाहीसे झाले होते. भावात्मक आर्तता समाप्त होऊन दिव्य, जाती स्मरणाचे ज्ञान प्राप्त झाले. आत्मिक अनंत शक्तिचा साक्षात्कार झाला. तो संन्यास घेण्यास उद्यक्त झाला. हो एक संकल्प मनात जागला त्या आधी तो बिछान्यावर झोपलेला होता, चंदन लावावे लागत होते परंतु शरीराचा दाह कमी झाला नाही. जेव्हा मन शांत होते तेव्हाच शरीर शांत होऊ शकते. जेव्हा आत्मा स्वस्थ होतो तेव्हा तन-मन दोन्ही स्वस्थ होतात. त्यांच्या संन्यासापुढे, संकल्पासमोर इंद्राचे आसन डळमळीत झाले. इंद्राला आश्चर्य वाटले, आतापर्यंत तो नमी चंदनासाठी व्याकुळ होता, बांगड्यांच्या आवाजाने उद्विग्न होत होता, आवाज झाला. तरी संत्रस्त, बंद झाला तरी संत्रस्त असणारा नमी राजा लगेच संन्यास घेण्यास कसा काय तयार होऊ शकतो ? हे खोटं तर नाही ? केवळ प्रतिक्रिया नाही ना ? भावनात्मक आवेग तर नाही ना ? केवळ काही काळासाठी आभास तर नाही ना ? त्याला पडताळण्यासाठी परखण्यासाठी इन्द्र जमिनीवर येतो.

इंद्राकडून नमीच्या वैराग्याची परीक्षा

इंद्र ब्राम्हणाच्या रूपात नमी राजा समोर येतो आणि नमीला एक-एक शंका विचारतो त्या दोघांच्या संवादातून असा उपदेश संवाहित - प्रवाहित झाला तोच नववा अध्याय आहे. हा अध्याय असा आहे की ज्यामध्ये जीवनातील अनेक समस्यांचे समाधान लपलेले,

दडलेले आहे. हा अध्यात्म सार्वभौम आहे. यात अध्यात्म, व्यवस्थापन, व्यक्तिगत दृष्टीनेही संपन्नता आहे. अशा अध्यायाची सखोलता पाहण्यासाठी या अध्यायाचे अर्क मिळविण्यासाठी नमी होऊनच ऐकले पाहिजे आणि गायले गेले पाहिजे. नमी होणे म्हणजे अखंड चेतना-अखंड आनंद आहे. ह्या उद्देशाने ऐका आणि बोला कि आपल्या चित्तातील परिवारातील, समाजातील खंड-खंड जुळून जातील, अखंडतेचा अद्भुत आनंद मिळेल संकल्प करा तन-मन समाज-परिवाराच्या अखंडतेसाठी, भक्तिभावाने नमीना मनन करून गायन करा.

दुःख जाणाऱ्याचे की हरवण्याचे ?

इंद्राने नमीला पहिला प्रश्न विचारला, ही मिथिला नगरी तू होतास तोपर्यंत अगदी आनंदात बागडत होती, खुप सुखी होती, गीत-गायन करीत होती, आज त्याच नगरीत क्रंदन, करूणास्वर का ऐकू येत आहे ?

किण्णुभो अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसंकुला सुव्वंति दारूणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥

या आनंदी राज्यात हे रडण्याचे सूर का ऐकू येत आहेत ? या प्रश्नाचे नमीने जे उत्तर दिले ते अगदी विलक्षण आहे. नमीने सांगितले “हे ब्राम्हणा, हे क्रंदन, हे रडणे, मी संन्यस्त होत आहे म्हणून नाही अपितु ह्या नगरीत एक चांगला वृक्ष होता, त्याला पान, फूल, फळ होती. दाट अशी सावली सुध्दा त्याची पडत असे. त्याच्या सावलीत अनेक पंथक विसावा घेत. अनेक प्रवासी-निवासी त्याचा आश्रय घेत असे. एक दिवस खूप जोरात वादळ आले आणि हा वृक्ष उन्मळून पडला आणि हा वृक्ष उन्मळून पडल्यामुळे हे पक्षी क्रंदन करीत आहे.”

बंधूनो, दोन प्रकारचे संबंध असतात. एक पक्ष्यासारखे प्रेम असते. एक पाण्यातील माशासारखे प्रेम असते पक्ष्याचे प्रेम रडण्याचे असते, माशाचे प्रेमजीव देण्याचे असते वृक्ष उन्मळून पडला की पक्षी थोडा वेळ

वृक्षाजवळ शोक करतात आणि थोड्या वेळाने दुसऱ्या एखाद्या वृक्षावर आश्रय घेतात. आपल्या ही जीवनात डोकावून बघा जेव्हा-जेव्हा जवळच्या व्यक्तींचा जीवनवृक्ष उन्मळून पडतो. थोडा वेळ, थोडे दिवस रडणे वगैरे चालते नंतर दुसऱ्या वृक्षांना जवळ केले जाते. परंतु मासा जो असतो, तलावात राहतो तलावाचे पाणी जर आटून गेले तर तो तिथेच मरणे मान्य करतो पण दुसऱ्या तलावात जात नाही, त्या तलावाला सोडत नाही. पाण्याशिवाय तो जगूच शकत नाही.

इंद्रभूती गौतमांची भक्ती मत्स्यासारखी आहे. सुधर्मास्वामींचीही अशीच एकनिष्ठ भक्ती आहे. अर्जुनमाली - चंडकौशिकही अशाच श्रद्धेने भरले आहेत.

नमीने सांगितले, “वादळामुळे वृक्ष उन्मळून पडला आणि वृक्ष पडल्यामुळे ते रडत आहे. त्यांचे आश्रयस्थान गेले म्हणून ते रडत आहेत. कोणी कुणासाठी रडत नाही. सगळे स्वार्थासाठी रडतात. आता कुणाच्या खांद्यावर डोके ठेवून रडायचे ? तो खांदा गेला याचे दुःख असते ? दुःख कशाचे असते ? आता खाऊ कोण घालणार ? तो गेला याचे दुःख नाही, आता माझे कोण बघणार याचे दुःख आहे.” तुम्ही लक्षात ठेवा एकदा मरण पावल्यावर जो विलाप करतात त्यात जाण्याचे दुःख नसते, हरवल्याचे दुःख असते म्हणून त्यांना पक्षी म्हटले जाते. पक्षीच रडतात, बाकी कुणी रडत नाही.

वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे

पत्त पुप्फफलोवेए - बहूणं बहु गुणे सया ॥

इंद्राच्या पहील्या प्रश्नाचे समाधान झाले लगेच तो दुसरा प्रश्न नमीला विचारतो “एस अग्गी य वाऊ य - हे राजन ! ज्या नगरीचा निर्माणकर्ता, मालक-चालक आहेस ती नगरी तुझ्या या मंदिराला, अंतःपुराला रानीमहालाला आग लागली आहे. समग्र राजमहल आगीत होरपळत आहे, तू त्याच्याकडे का पहात

नाहीस ? तिकडे का बघत नाहीस ?” बंधूनो लक्ष देऊन ऐका इंद्राचा प्रश्न, अगदी सखोल अर्थपूर्ण प्रश्न आहे की नमी या जळणाऱ्या राजप्रसादाकडे तू का पाहात नाही ? इंद्र विचारीत नाही की तू ती आग का विझवत नाही ? कारण स्पष्ट आहे की जो मागे बघतो, तो भटकतो, मागे वळून पाहिलं की यात्रा तिथेच राहिली.

बंधूनो ! एकदा सिद्धिच्या - ध्येय प्राप्तीच्या मार्गावर चालायला सुरुवात केली तर चुकूनही मागे वळून पाहू नका मागे वळून पाहणारे मागेही जाऊ शकत नाही आणि पुढेही सरकू शकत नाही. त्याचे तन एकीकडे राहते व मन दुसरीकडे जाते. इंद्राच्या फिरकी प्रश्नाला समर्पक - सटिक उत्तर देताना नमी म्हणतात.

सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किंचणं
मिहीलाए उज्झ माणीए, न मे उज्झइ किंचणं ।।

“हे ब्राम्हणा ! मी सर्व काही त्यागलेले आहे. मी माझ्यात रममाण आहे. मी माझ्यातच तन्मय होऊन जगत आहे, अंतरंगात रंगून गेल्यामुळे बाह्यजगात दृष्टी जातच नाही. आतच दंग असल्यामुळे बाहेरील घटनेने माझे चित्त भंग होत नाही मग मी काय बघणार ?

आत्म्याशी एकरूप होण्याच्या पथावर चाललो आहे त्याला दोन रूपे - प्रिय - अप्रिय असे दोन विभागच मनात उरले नाही. बंधूनो, लक्षात ठेवा ज्याला अप्रियतेपासून, दुःखापासून, वियोगापासून दूर रहायचे असेल त्याला अत्यावायक आहे सर्वप्रथम प्रियापासून, सुखापासून, संयोगापासून स्वतःला दूर ठेवा. ज्याने सुखाबरोबर जवळीक साधली त्याला दुःखाची जवळीक बांधलीच समजा. अपमानापासून वाचायचे असेल तर सन्मानाचा स्वीकार करू नका. निंदेपासून वाचायचे असेल तर प्रशंसेपासून दूर रहा. विरोध नको असेल तर अनुरोधाला टाळणे शिका, कारण हा क्रमच आहे. विरोध अनुरोधाच्या मागे, निंदा प्रशंसेच्या मागे, अपमान सन्मानाच्या मागून लगेच येणारचं तेच नमी इंद्राला सांगत आहे की मला बाह्य जगात प्रिय-अप्रिय असे

काहीच नाही त्यामुळे वळून प्रयोजनही नाही. आपण इतरत्र पाहतो ते व्यक्तिशी, वस्तूशी, पदार्थाशी, प्रपंचाशी असलेल्या नात्यामुळे आता नातंच उरलं नाही मग पाहू कशासाठी ?

तसं पाहिलं तर पहिल्या प्रश्नाच्या उत्तरातच विषय संपला होता. जेव्हा नमीने सांगितले होते की वृक्ष धराशाथी झाला होता. बोलण्यासारखं काही उरलच नाही. कारण एकदा मनच उध्वस्त झाले की बाकी बोलण्यात काय अर्थ ? उखडलेला वृक्ष पुन्हा लावला जात नाही पण इंद्राला विश्वास नाही म्हणून अनेक दृष्टिकोनातून पहात आहे की वृक्ष खरंच उखडला गेला की नाही ? तुम्ही ही पाहता ना ? कुणी संन्यास घ्यायला तयार झाला की प्रत्यक्षात तो घेईल की नाही ? हे कर.. ते कर पण वृक्ष खरंच उखडला गेला तर पुन्हा रोवला जाऊ शकत नाही. खोटा उखडला असेल तर पुन्हा उभा केला जाऊ शकतो.

इंद्र म्हणतो “हे क्षत्रिय ! हे नगर तू वसविले पण त्याच्या सुरक्षेची व्यवस्था कर व मग घे संन्यास” इंद्राच्या अनुरोधाने प्रेरित झालेला नमी अगदी सुंदर उत्तर देतो की “हे विप्र देवा ! मी श्रद्धेचे नगर वसविले आहे आणि श्रद्धेच्या या नगरीला सुरक्षित ठेवण्यासाठी तप आणि संवराची अर्गला लावली आहे क्षमेचे कुंपण-परकोटा केला आहे. तीन गुपितांनी अगदी मजबूत करून ठेवलंय.”

क्षमेची सार्थकता

बंधूनो ! या ठिकाणी क्षमा या शब्दाचा अर्थ व्यवस्थित लक्षात घ्या. क्षमा म्हणजे इथे माफी नाही. इथे क्षमा म्हणजे कुंपण लक्ष्मण रेषा आहे. समजा मला एखाद्या व्यक्तित्ने अपशब्द वापरला अथवा मला काटा टोचला व मी तो काढून टाकला तसे मी त्याला माफ केले याला नमी क्षमा म्हणत नाही.

नमी सांगतात “क्षमा त्याला म्हणतात जसे एखाद्याने आपल्याला अपशब्द वापरला पण आपल्यापर्यंत

तो पोहचलाच नाही, एखाद्याने बाण मारला पण तो आपल्याला लागू शकलाच नाही त्याला परकोटा कुंपन म्हणतात.” एखाद्याने आपल्याला शिवी दिली व आपण दुःखी झालो तर त्याची माफी दिली जाऊ शकते क्षमा नाही. माफ करण्याचा एकच अर्थ असतो, तू अपराध केला आहे तू अपराधी आहेत मी तुला माफ करीत आहे.” जेव्हा समोरच्याला अपराधी नाही. सामान्य मनुष्य नाही तर देव समजले जाते तेव्हा क्षमेचा अर्थ सार्थ होतो. अशा या क्षमेला शक्तिमान मजबूत बनवणारी मनगुप्ती, वचनगुप्ती व काय गुप्ति आहे.

अंतर्गत दुर्बलतेला, दुबळ्या तन-मनाला मजबूत बनविणे याला गुप्ती म्हणतात. बाहेरून आक्रमण होऊ नये याची व्यवस्था करणे याला संवर म्हणतात. अशा या क्षमेच्या पराकोट्याला या तीन गुप्तींची जोड आहे.

पुढे नमी सांगतात “पराक्रमाचे धनुष्य हाती असावे त्या धनुष्याची दोरी ईर्यासमितीची असावी धैर्याने धूतीने त्याचे बंधन बांधावे व सत्याने ते बंधन पक्के करावे. तपाच्या बाणांनी कर्मसेनेचे भेदन करणारा मुनी संग्रामापासून, संघर्षापासून मुक्त होतो.

ध्येयप्राप्तिसाठी तडजोड नको

बंधूनो ! लक्षात घ्या दोन्ही गोष्टी बरोबर चालत आहेत नमीची गोष्ट आणि आपलीही गोष्ट. विचार करा, आपण का फसत जात आहोत याच मूळ कारण आहे. आपण जे लक्ष्य निर्धारित करतो ते पूर्ण होण्याआधी आपण तडजोड करतो आणि तेव्हा संशयग्रस्त होऊन फसत जातो आणि लक्ष्यावर जो संपूर्ण लक्षकेंद्रित करतो - लक्ष्याबरोबर कोणतीही तडजोड स्वीकारत नाही. त्यालाच ध्येयप्राप्ती होते.

अर्जुनाला द्रोणाचार्यांनी नेम साधतांना प्रश्न विचारला अर्जुना ! तुला काय दिसतय ? अर्जुन म्हणाला, “गुरूदेव, मला केवळ त्या पक्ष्याचा डोळा दिसतो.” धर्मराजाला विचारले, तो म्हणाला, “वृक्ष दिसतोय, तुम्ही सुध्दा दिसत आहात, सर्व काही

दिसतय.” द्रोणाचार्यांनी सांगितले, “बाण चालवायची आवश्यकता नाही.” बाण सोडण्याची परवानगी त्यालाच असते ज्याला लक्ष्याशिवाय दुसरं काहीही दिसत नाही.

नमीही असाच आपल्या लक्ष्यावर केंद्रित झाला आहे.

शाश्वत घर हवे

इन्द्र नमीला म्हणाला, “राजा आधी घर बनव, सुरक्षेची व्यवस्था कर नंतर या संन्यास मार्गावर पाऊल टाक.” नमी म्हणाले, “देवा ! तुम्ही कोणत्या घराची गोष्ट करीत आहात ? जेथे जायचे आहे तेथे घर बनवेल. जेथुन कधी ना कधी जायचे आहे, घर खालीच करायचे आहे तेथे कशाला घर बनवू ? शाश्वत - चिरंतन - ध्रुवासारखे घर बनवायचं आहे मग हे नश्वर अध्रूव- अशाश्वत घर कशासाठी ?”

संसयं खलु सो कुणई, जो मगो कुणई घरं ।

वत्थेव गुंतुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥

आत्म्याला ज्या गंतव्य स्थानापर्यंत जायची इच्छा असते तेथेच शाश्वत घर बांधले जाऊ शकते. इंग्रजीत एक वाक्य आहे त्याचा अनुवाद केवळ सांगतो, “मूर्ख माणसे घर बांधतात आणि बुध्दीमान लोक त्या घरात राहतात.” हे व्यवस्थित जवळून बघायचे असेल तर पुणे-मुंबईला जावे, खूप मोठ-मोठाले बंगले झाले आहेत. ज्यांनी बांधले, ज्यांची मालकी आहे ते वर्षातून १५ दिवस येतात, तिथे बाकी साडे अकरा महीने त्या बंगल्याचा उपभोग कोण घेतो ? आता सांगा बंगला कोणाचा ? म्हणून परमात्मा सांगतात जेथे मुक्काम आहे जेथे जायचे आहे ते ध्येय असू द्या, त्याच्या व्यतिरिक्त दुसरे ध्येय ठेवू नका. असे सुंदर प्रश्न-उत्तर या अध्यायात आहे. जे आपल्या जीवनात कोडं उलगडण्यास सहायक ठरते.

अपराध कोणाचा ? शिक्षा कोणाला ?

पुन्हा इन्द्र नमीला त्याच्या क्षत्रियवृत्तीला आवाहन देत विचारतो, “राज्यात अनेक अपराधी आहेत त्यांचा

नायनाट केला नाही. त्यांना दंड देऊन न्याय प्रस्थापित केला नाही. असा न्याय न करताच तू कसा जातोस ? घराची-राज्याची सर्व व्यवस्था लावून मग जावे ?

नमीने जे उत्तर दिले ते शाश्वत आहे. सनातन सत्य आहे आजही त्यांनी दिलेली उत्तरे आपल्या जीवनात सत्य होत आहेत. नमी म्हणाले कित्येकदा असेच पाहिले की अपराधी सुटून जातो आणि निरपराधी दंडित होतो... “केवळ समाजातच नव्हे परिवारात, स्वतःच्या जीवनातही किती वेळा असे घडते. मन अपराध करते व शिक्षा शरीराला भोगावी लागते, अपराध कोणाचा ? शिक्षा कोणाला ?

नमी सांगतो “जिथे निरपराधीला शिक्षा मिळते अशा शिक्षेच्या मार्गावर चालण्यात काय मजा आहे?” आपण ही गोष्ट कित्येकदा अनुभवली असेल आपल्या जीवनात अपराध कोणाचा असतो शिक्षा दुसराच भोगत असतो. समाज कुटुंबाविषयी नाही अपितु स्वतःसंबंधी सूत्र पडताळा की जेव्हा तुमचा अपमान होतो, उपेक्षा होतो, तुम्हाला राग येतो यासाठी जबाबदार, अपराधी समोरचा व्यक्ती आहे की आंतरीक कर्मांचे शरीर अपराधी आहे ? जेव्हा तुमचे मन भटकते, मन लूब्ध होते, मनात विकार जागृत होतात. तेव्हा आपण कुणाला शिक्षा देतो ? कुणाला दोषी ठरवतो ? अशावेळी मूळ कारण आपल्या अंतरंगातील मोहनीय कर्म असतो त्याला सावरायचे की बाह्य व्यक्ती, वस्तु, परिस्थितीला ? आपण बाह्यपरिस्थितीलाच कारण पकडून त्यातच सुधारणा करायचा प्रयत्न करीत असतो आणि खरा अपराधी तर आतच दडलेला असतो. अशा या अंतर्बाह्य परिस्थितीची अनुभूती झालेला नमी इंद्राच्या प्रश्नांनी विचलीत न होता अगदी सडेतोड सटीक-सखोल उत्तरे देत आहे.

आत्मविजेता बना

भाविकांनो ! आजपर्यंत कितीवेळा आपण क्रोडाला, अहंकाराला जिंकण्याचा प्रयत्न करतो.

इंद्रियांवर ताबा मिळविण्याचाही प्रयत्न करतो. पण निराशा आणि विफलताच मिळते. किती वेळा प्रयत्न करतो की पुन्हा अहंकार बाळगणारच नाही. परंतु जसे मांजरी समोर उंदीर येत नाही तोपर्यंत सर्व प्रशिक्षण लक्षात राहते उंदीर दिसला कि प्रशिक्षण विसरून जाते. तसेच क्रोध, अहंकार, लोभाचेही होते. प्रवचन कीर्तन ऐकतो. तेव्हा कितीवेळा ठरवतो, आता राग करायचा नाही पण परिस्थिती निर्माण होते तेव्हा क्रोध केल्याशिवाय रहात नाही. क्रोध जिंकता येत नाही याचं काय कारण असेल ? कारण क्रोध जिंकण्याची आपली प्रमाणिक इच्छा आहे. त्याच्यापासून मुक्ती सुध्दा मनापासून हवी आहे पण मिळत नाही. नमी राजा म्हणतात, “स्वतःला जिंकून घ्या, क्रोध-मान-माया-लोभ सर्व आपोआप जिंकले जातील. एकदा स्वतःच्या आत्म्यावर विजय प्राप्त केला की सर्वांवर विजय प्राप्त करता येतो. स्वतः पराजित आहोत तर षड्रिपूही आपल्याला पराजित करतील.” एवढा वेळ इंद्र नमी राजाला त्याच्या दायित्वाची जाणीव करून देत होता. आता तो त्याचा अहंकार जागा करतो आहे. इंद्राने नमीला प्रश्न विचारला, “राजा तू संन्यास घेत आहे, पण तुझा निर्णय अयोग्य आहे कारण अनेक राजे आहेत की जे तुला अजूनही राजा मानीत नाही, सन्मान करीत नाही त्या सर्वांचा तू सर्वप्रथम पराभव कर आणि नंतर संन्यास घेणे योग्य होईल. सर्वांना हरवून स्वतः जिंकून गेला नाहीस तर जनता चर्चा करेल की तुला राज्य करता आले नाही म्हणून तू संन्यासी बनला.

नमीने सुंदर उत्तर दिले, “हे ब्राम्हणा! कुणाला जिंकण्याच्या गोष्टी करीत आहे ? सर्वांना जिंकले पण स्वतःकडून पराभूत झालो, स्वतःलाच जर जिंकता आलं नाही तर तो विजय काय कामाचा ? स्वतःच्या लोकांकडून उपेक्षा आणि बाहेरच्या लोकांकडून प्रशंसा असा विजय काय कामाचा ? बाहेर हार तुरे भेटतात आणि घरात अरे-तुरे ने वागवतात असा सन्मान काय

कामाचा ? उंबरठ्याबाहेर सत्कार आणि घरात अत्याचार “गप्प बसा, तुमची लायकी आम्हाला माहीत आहे” अशी अवस्था काय कामाची ?

बाहेरचा सन्मान तेव्हा सुशोभित होतो जेव्हा घरातले त्याचा मान ठेवतात.

महात्मा गांधीचे जीवन फार सुंदर-सत्यमय होते. परंतु त्यांच्या मनात एक फार मोठी खंत होती की ते सर्व जगाला सुधारू शकले पण आपल्या मुलाला नाही. सर्व जगाला शाकाहारी बनविण्याचा प्रयत्न केला, संपूर्ण विश्वाला सत्याचे धडे दिले परंतु पोटच्या गोळ्यापासून पराभूत झाले. इतिहास उघडून बघा ही उत्तुंग शिखरावर पोहचणारी महान माणसं त्यांच्या व्यक्तिगत जीवनांत डोकावून बघितलं तर आपलं डोक चक्रावेल.

छत्रपती शिवाजी महाराज, त्यांच्या उतरत्या वयात आयुष्याची स्थिती बघा. जर आपण श्रीमान योगी कादंबरी वाचली असेल तर लक्षात येईल औरंगजेबा सारख्या व्यक्तिशी लढा देणारे शिवाजी घरातील भांडणात न्याय करू शकले नाहीत हृदयस्पर्शी प्रसंग आहे. छत्रपतींना एक ताट मिळाले होते, ते त्या ताटातच जेवण करीत असत. जर अन्न विषमिश्रित असेल तर ताबडतोब त्यांना समजत असे. एक दिवस ते ताट फुटले, त्यावेळी शिवरायांचे शब्द जे रणजीत देसाईंच्या कादंबरीत लिहिलेले आहे, ‘जीवनच भंगत आहे, आता ताट भंगण्याची काय चिंता करावी ?’ ज्या व्यक्तित्तेने शून्यातून जग निर्माण केले, तो व्यक्ति घरातील बंडखोरी संपवू शकला नाही.

म्हणूनच नमी अगदी सखोल अर्थ सांगत आहेत, संपूर्ण जगाला जिंकून घेतले आणि आप्तांकडून-स्वकीयांकडून पराभूत झालो तर जगावरचा विजय कवडीमोल होईल. स्वतःवर विजय प्राप्त केला म्हणजेच जग जिंकले म्हणून सर्वप्रथम आत्मविजेता व्हावे.”

इंद्राला आश्चर्य आणि कुतुहल वाटले की जो अखंड भोगात बुडालेला होता तो क्षणात त्यागी योगी

कसा बनू शकतो ? पण भगवंत सांगतात हे शक्य आहे. जेव्हा अंतरंगातील दिव्य शक्ती जागृत होते. तेव्हा भोग सोडावे लागत नाही, सुटून जातात.

आधी पाककर्म, नंतर दानधर्म

एक प्रश्न संपला की इंद्र पुन्हा नमीला डिवचतो आहे. काही झाले तरी नमी इंद्राच्या जाळ्यात अडकत नाही. अनेक सखोल गोष्टी या अध्ययनात आहे पण सर्वच इथे नमूद करणे अवघड कार्य आहे पुन्हा इंद्राने नवीन फासा फेकला. “नमी, असाच संन्यास मार्गावर जात आहेस तर जाण्यापूर्वी थोडे दान-धर्म करून जा. लोकांना खाऊ-पिऊ घाल. यज्ञ, होम-हवन कर आणि नंतर निश्चित मनाने जा.” नमीने अगदी सटीक उत्तर दिले - “हे ब्राम्हणा, कोणत्या होम हवनाच्या गोष्टी करीत आहात ? कोणास दान-धर्म करण्यास सांगत आहात ? अहो ! लाख-लाख गोदामं जरी रोज दान केले तरी सुध्दा संन्याशाच्या जीवनाची तुलना होऊ शकत नाही, संयमी जीवनाची होड त्या जीवन चर्येची तोड नाही. श्रेष्ठतम मार्ग आहे हा... मग हे कसे करीत बसू ?”

आपल्या वैयक्तिक जीवनाकडे बघा १८ पापकर्म करून, उलटे सुलटे धंदेकरून संपत्ती कमवायची-जमवायची, दोन नंबर धंदे करून समृद्ध व्हायचे व नंतर दानधर्म करून दानशुरांचे विरुद्ध मिरवायचे हे श्रेष्ठ, की पापकर्म न करणे, वाममार्गाने पैसा न मिळविणे, संयमाचा बांध घालणे हे श्रेष्ठ आहे ? कपडे घाण झाल्यावर, मळके करून धुणे उत्तम की मळके होऊच नये याची सावधानी ठेवणे उत्तम ? नमी हेच समजावून सांगत आहे की मळके करून धुण्यापेक्षा मळके न करण्याची दक्षता बाळगणे श्रेष्ठ आहे. दान देण्यापेक्षा चोरी करू नये याची दक्षता बाळगावी. दहा व्यक्तित्तांचा अधिकार हिसकावून एका व्यक्तित्ताला अधिकार बहाल करण्यात कसली श्रेष्ठता ? कित्येकांचा गळा कापून गोळा केली संपत्ती आणि मग दान देऊन आपल्या गळ्यात सन्मानाचा

हार घेण्यात कसला धर्म आहे ? म्हणूनच नमी ठणकावून सांगत आहे. की संयमच राजा आहे त्याच्या श्रेष्ठत्वाला कशाची तोड नाही. संयमाच्या सुखापुढे चक्रवर्तीचे सुख सुध्दा पाणी भरतं. जर कशाची कामना, याचना, अभिलाषा करायची असेल तर ती फक्त संयमाचीच करावी.

संयमधर्म – श्रेष्ठतम् धर्म

पुन्हा इंद्र नमीला म्हणतो - “अरे, पण तू गृहस्थाश्रम सोडून आत्ताच का संन्याशी बनतो ?

घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं
इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ॥

गृहस्थाश्रम हा खूप घोर आश्रम आहे. कठीण, भयंकर आश्रम आहे. पण गृहस्थाश्रमातही संयम आहे, तप आहे. संसारात राहूनही त्याग करता येतो, इथे राहून तप, संयम, जप आदि कर त्यासाठी संन्यासच कशाला घ्यायला हवा ?”

मासे मासे तु जो बालो, कुसगोणं तु भुंज

न सो सुयक्खाय धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं॥

“हे विप्रा ! मी गृहस्थाश्रमात राहून कितीही जप-तप केले तरी चंद्राच्या सोळाव्या कलेची ही सर होणार नाही इतके उत्कृष्ट - श्रेष्ठ आहे सन्यस्त जीवन महिनाभराचा उपवास सोडताना अगदी गवताच्या टोकावर बसेल एवढच अन्न घेणारा तपस्वी पण खऱ्या धर्मासमोर, संयमासमोर चंद्राच्या सोळाव्या कलेएवढाच आहे. अध्यात्माच्या सखोल अनुभूतीत असलेला संयम - धर्म हाच श्रेष्ठतम आहे, बाकी सर्व निव्वळ पाखंड आहे. मग का म्हणून मी माझ्या जीवनाचे मौल्यवान क्षण या संसारात का व्यर्थ घालवू ?

नमीच्या क्रोधाची, अहंकाराची परीक्षा - समीक्षा झाल्यानंतर इंद्र आता लोभाची परीक्षा घेत आहे. तो नमीला म्हणतो, “राजन् ! अरे या संन्यासपथावर आरूढ होण्याआधी हा राजकोश समृद्ध कर, सोनं, चांदि माणिक मोती, वस्त्र, वाहन आदिंची आधी जमवाजमव कर.

नंतर प्रवज्या ग्रहण कर” नमी म्हणाले, “विप्रदेवा ! किती गोळा करून ठेवू, किती जमवू ? कारण, इच्छेला अंत नाही. आपला अंत येईल पण इच्छेचा अंत येणार नाही. इच्छा आकाशासारखी अनंत आहे. आकाश कितीही पाऊस झाला तरी भिजत नाही. सूर्याच्या उष्णतेने तापत ही नाही तशीच इच्छा ही सतत अतृप्तच असते.” आपली जीभच बघाना ! किती ही तेल तूप खाल्ले तरी चिकट होत नाही पुन्हा कोरडी ती कोरडीच. स्निग्धता जिव्हेवर तरळत नाही असेच इच्छेचे असते लोभाचे असते.

भोग-इहलोकी विष व परलोकी विषच

इंद्राने पुन्हा प्रश्न विचारला - “तू संन्यासी होण्याचा हेतू काय आहे ? स्वर्गातील सुख प्राप्तीसाठी ! दानही त्यासाठीच करतो ना ? की, पुढच्या जन्मी लाभ मिळेल म्हणून तू हा सर्व त्याग करित आहेत सर्व भोग सामग्रीचा त्याग करून जात आहे. मिळालेले भोग-सुख सोडून जात आहे आणि न मिळालेल्या भोगाची इच्छा करित आहेस. याचा अर्थ तू भोगांचा त्याग करत नाहीस परंतु न मिळालेल्या गोष्टींची कामना-वासना पूर्ण करण्यासाठी त्याग करित आहेस. तू पृथ्वीलोकावरील भोगांचा त्याग स्वर्ग लोकांतील भोग प्राप्तीसाठी करित आहे.”

नमी म्हणाले, “नाही, मी भोग प्राप्तीसाठी भोगांचा त्याग करित नाही. कारण भोगांचा अर्थ अन् त्याची निरर्थकता मी अनुभवली आहे.

सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा

कामे पत्थमाणा, अकामा जंति दोग्गइं ॥

मला जाणवतयं कामभोग हे ह्या काट्यासारखे आहेत. भोग विषाप्रमाणे आहेत. ते इहलोकीही विषारी आहेत आणि परलोकीही विषच उगळणारे आहेत. मी ते विष प्राप्त करण्यासाठी इथल्या विषाचा त्याग करित नाही. याला मी विषमय समजतो. जेव्हा आपण क्रोध कपट.. अहंकार करतो तेव्हा आपली ऊर्जा, शक्ती स्पंदन कशी विषयम होऊन जातात.

नमी द्वारा आत्मशक्तीचा अर्थबोध

अहे वयइ कोहेणं, माणेणं अहमा गई ।

माया गई - पडिग्घाओ,लाभोओ दुहओभयं ॥

आपली ऊर्जा हीच आपली आत्मशक्ती असते. जेव्हा आपण क्रोध करतो तेव्हा आपलीच उर्जा अधोगामी बनते, अहंकारामुळे आपलीच शक्ती आपल्यासाठी अडथळा निर्माण करते, मायेमुळे आपलीच शक्ती आपल्या कामात व्यत्यय आणते. लोभामुळे आपलीच दिव्य उर्जा दानवी बनून जाते.

आपल्या उर्जेला आत्मशक्तीला आपण जेव्हा क्रोधविष्ट करतो तेव्हा ती अधोगतीला जाते, अहंकाराशी जोडली तर तेव्हा ती आंधळी होते, माये बरोबर एकाकार झाली की, बंधन-बेडी बनते आणि लोभाने आवृत्त झाली तर भयमुक्त बनते.

नमीने अंतरंगातील उर्जेसंबंधी, शक्ती संबंधी महत्वपूर्ण बाब सांगितली. इंद्राला जाणवले नमीचे वैराग्य पार सखोल आहे. वरवरचे नाही तेव्हा त्याने हार पत्करली आणि मूळ स्वरूपात प्रगट झाला आणि आनंदाने गाऊ लागला.

अहो ! ते णिज्जिओ कोहो, अहो ! ते माणो पराजिओ
अहो ! ते निरक्किया माया, अहो ! लोभो वसीकओ ॥
अहो ! ते अज्जवं साहु, अहो ! साहु मद्दवं
अहो ! ते उत्तमा खंती, अहो ! ते मुत्ति उत्तमा ॥
इहं सि उत्तमो भंते ! पेच्चा होहिसि उत्तमो
लोगुत्त मुत्तमं ठाणं, सिध्दिं गच्छसि नीरओ ॥

इंद्राने नमीला भावपूर्वक नमन केले व म्हणाला “धन्य, धन्य राजर्षी, धन्य हो भगवंत ! तू क्रोडाला जिंकलेस, तू अहंकाराला पराजित केले आहेस, तू मायेला निष्कृत केले, तू लोभाला वशीकृत केलेस, तुझी सरळता प्रशंसनीय आहे. तुझी कोमलता प्रशंसनीय आहे, तुझी क्षमा उत्तम आहे, तुझी मुक्तिही उत्तम आहे. तू आत्ताही व भविष्यातही राहशील. असा तू अति उत्तम होऊन सिध्दगतीस प्राप्त होशील.” एवढे बोलून इंद्र नमीला प्रदक्षिणा, वंदना करून निघून जातो.

भगवंत वाणीचा महीमा

ही परमपिता परमेश्वराची वाणी आहे. या शब्दांची महिमाच वेगळी आहे. जगावेगळी याची महत्ता आहे. १९७३ मध्ये गुरूदेवाच्या सेवेत पोहोचलो होतो. १६ ऑगस्ट नागपूरचा चातुर्मास - उत्तराध्ययन सूत्राची आराधना सुरू झाली. अनुष्ठान सुरू करण्यापूर्वी गुरूदेवांनी जे शब्द उच्चारित केले, ते शब्द संजीवनी बनून जीवनदायी झाले. गुरूदेवांनी सांगितले होते की, “ज्याप्रमाणे मांत्रिक कोणाला सर्पदंश झाला, विंचू चावला तर मंत्र टाकतो आणि विष उतरते. मांत्रिकाने कोणता मंत्र टाकला ? तो ऐकणाऱ्याला कळत नाही. कोणत्या भाषेत होता हेही उमजत नाही तरी सुध्दा विष मात्र उतरते. गुरूदेवांनी सांगितले, मांत्रिकाचे शब्द ऐकून जर सापाचे विष वितरते तसे तीर्थकराचे शब्द ऐकून कर्माचे विष का उतरणार नाही ? विकृतीचे विष का उतरणार नाही ? अर्थ समजला किंवा नाही समजला तरी विष उतरणारच, ही दृढ श्रध्दा मनात जन्मास येऊ द्या.” या पारायणात पार बुडून जा ... नखशिखान्त भिजून चिंब व्हा आणि परमसत्तेशी नाते जोडा. एकदा भगवंताच्या वाणीशी जोडले गेलात की राक्षसांच्या वारीचा जीवनात प्रवेश बंद होतो आणि भगवंताच्या वाणीशी जुळले नाही तर किती दुष्कर्माचे दुर्गुणांचे - दुर्व्यव्यक्तींचे नाते जुळेल याला मर्यादा राहणार नाही. श्रध्देचा मार्ग अनुसरा म्हणजे संशयाचे अनंत मार्ग बंद होतील. ती भक्ती ती अपरंपार श्रध्दा जागृत करा. (क्रमशः) ●



अनुरूप वधू पाहिजे

वर : घटस्फोटित, विना अपत्य,

जैन ओसवाल.

वय : ५३ वर्षे, उंची : ५'.१०''

शिक्षण : D.C.E.

स्वतःचा व्यवसाय,

स्वतंत्र घर पुण्यात

अपेक्षित वधू : अनुरूप,

वय : २८ - ३४ वर्षे,

खानदानी जैन ओसवाल, गुजराथी

घटस्फोटित, विधवा चालेल.

संपर्क : ९८५०५५७६०१